रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २४: बाम-ए-नानक (नानक की ज्योत)

'बाम-ए-नानक', नानक की ज्योत, वहदत के सदैव नूर का ही रूप है। सरबत के भले की सोच में जड़ें रखने वाले गुरु नानक ने फ़रमाया कि कोई ऊंचा या नीचा नहीं है; सिर्फ नेकी ही शिरोमणि है।

परविरत निरविरत हाठा दोवै विच धरम फिरै रैबारिआ ॥
मनमुख कचे कूड़िआर तिन्नी निहचउ दरगह हारिआ ॥
गुरमती सबद सूर है काम क्रोध जिन्नी मारिआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

कर्म और सोच-विचार धर्म की अगुआई में चलते दो सिरे हैं।
मनमुख कमज़ोर और नकारात्मक है। वह निस्संदेह अपनी सत्यनिष्ठा खो देते हैं।
रूहानी मन और सबद योद्धा हैं जिन्होंने काम और क्रोध पर विजय हासिल कर ली है।
(राग मलार, गुरु नानक)

बाजीगर रस्सी पर चलने का काम आसानी से कर लेते हैं क्योंकि उन्होंने संतुलन की कला सीख ली है। बाहरी भटकनों में बहने की बजाय अपनी आंतरिक मार्गदर्शक शक्ति के साथ एकसुरता कायम रखते हैं। इसी तरह दो दुनियावी सरगर्मियों में तवाज़न कायम करने के दो तरीके हैं- 'परवरित', बाहरी अभ्यास; और 'निर्वरित', आंतरिक सोच-विचार। गुरु नानक ने कहा, 'धर्म' मार्गदर्शक शक्ति की धुरी है। इस हुनर को सीखने वाला इंसान वीर सूरमा है जो रूहानियत के राह पर आसानी से चल सकता है।

बीकानेर से गुरु नानक ने उच, मुल्तान, झंग, दिपालपुर, शेर गड़, मेघा, चुनियां, मानक देकी, कंगनपुर, कसूर, माँघा, लाहौर और सियालकोट का सफ़र किया और वापिस करतारपुर पहुंच गये।

उन्होंने पहले बीकानेर से उच्च का सफ़र किया।

हम इंडिया-पाकिस्तान की सरहद में वाघा नाके से पाकिस्तान जा रहे हैं और दक्षिणी पंजाब में उच्च से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र जारी रखेंगे।

मैं अज़ल का शुल हूँ, काइनात का नूर हूँ।
मैं में तू मौजूद।
ऊ अल्लाह का अगाहिया। यहाँ तू और मुँ।
(अलन फकीर) (अल्लन फकीर)

मैं आदि काल से सृजना की चिंगारी हूं, कायनात का नूर हूं।
तुम मुझ में बसे हो।
मेरा अस्तित्व धन्य हो जाता है जब मुझे अहसास होता है कि हम इस अस्तित्व का हिस्सा हैं।
(अल्लन फकीर)

गुरु नानक दूसरी बार उच्च जा रहे थे। पहली बार तीसरी उदासी के दौरान गुरु नानक और भाई मर्दाना ने मख़दूम हाजी अब्दुल शेख़ बुख़ारी के पास समय गुज़ारा था जो जलालुद्दीन बुख़ारी की दरगाह के तत्कालीन 'मख़दूम' थे। इस उदासी तक मख़दूम हाजी अब्दुल शेख़ बुख़ारी की मौत हो चुकी थी। उच्च में संक्षिप्त सा पड़ाव करने के बाद गुरु नानक चेनाब नदी के पूर्व की ओर मुल्तान शहर गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम उच्च से उत्तर की ओर मुल्तान शहर का सफ़र कर रहे हैं।

हम सूफ़ी फ़कीर हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी की दरगाह जा रहे हैं जिनका जन्म अफ़ग़ानिस्तान के सब्ज़वार में हुआ था।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने उच्च का सफ़र किया और बाद में मुल्तान पहुंचे। वह हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी की दरगाह पर गये।

हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में उप-महाद्वीप में इस्लाम का संदेश देने मुल्तान आये थे। उनकी रूहानी शायरी स्थानीय बोलियों में है जिसमें उप-महाद्वीप की बोलियां पूरबी, हिंदी, गुजराती, सिंधी, सरायकी और पंजाबी शब्दों की भरमार है। वह लिखते हैं;

सच्चा मेरा ख़ालिक सिरजन, हर आपे उपाया शाह धुंधूकार।
(हज़रत शाह शमसुद्दीन सबज़वारी)

खालिक की सृजना करने वाला मेरा सृजनहार सच्चा है। कायनाती ऊर्जा अपने आप पैदा होती और वाष्पित हो जाती है।
(हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी)

इन शब्दों ने मुझे गुरु नानक की रचना 'जप' की याद दिलाई है जिसमें यही ख़्याल है। सृजना करने के बाद, सृजनहार आप ही देखकर निहाल होता है।

कर कर वेखै नदर निहाल ॥
(जप, गुरु नानक)

कर्ता सृजना करता है और आप ही देख कर निहाल होता है।
(जप, गुरु नानक)

तीसरी उदासी के दौरान गुरु नानक और भाई मर्दाना ने मुल्तान का सफ़र किया और उनकी मेहमान-नवाज़ी मख़दूम बहावदी ने की जो उस समय शेख़ बहा-उद-दीन ज़करिया की दरगाह के रूहानी प्रमुख और सेवादार थे। गुरु नानक के आगमन की ख़बर सुनकर, मख़दूम बहावदी उनसे मिलने के लिये हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी की दरगाह पर आ गये। वह यह जानने के जिज्ञासु थे कि गुरु नानक ने अपने घर के आराम छोड़ कर उदासियां जारी रखी हैं और शायद वह अभी भी किसी रूहानी उस्ताद की तलाश में हैं। उनके जवाब में गुरु नानक ने गायन किया,

सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचार ॥
सचे सचा बैहणा नदरी नदर पिआर ॥
गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहार ॥
गुरमुख बूझै जाणीऐ हउमै गरब निवार ॥
(राग मारू काफी, गुरु नानक)

सच्चे गुर विचार को सुनना और उस पर सोच-विचार करना ही सच्चा और शाश्वत रास्ता है।
जब सत्य मन में बसा होता है, तब मनुष्य प्रेम से संपन्न होता है।
ज्ञानी की आंखों में सच्च सजा हुआ हY और उनकी इच्छा सच को देखने की सलाहियत रखने वालों से मिलने की है।

रूहानियत के आरज़ूमंदों को अहसास होता है और वह जानते हैं कि अहंकार और गुरूर का निवारण होना चाहिये।

(राग मारू काफी, गुरु नानक)

गुरु नानक रूहानी सहयोग वाले रास्ते के राही थे। उनके लिये संतों और आरज़ूमंदों से गोष्ठी, इलाही मुर्शिद के साथ संवाद के समान थी। जिस स्थान पर मुहब्बत और सच का वासा था, वहीं उनका घर था।

अथर जहानिया जहानगश्त: मुल्तान को सूफ़ियों की भूमि कहा जाता है। सरज़मीने औलिया कहा जाता है या औलिया का घर भी कहा जाता है। बाबा गुरु नानक सरकार जब यहां आये तो उस समय के औलिया जिनके नामों का ज़िक्र नहीं आता परन्तु औलिया का ज़िक्र आता है कि उन्होंने दूध का कटोरा भेजा। ऐसा करने का मकसद यह संदेश देना था कि यह सूफ़ियों की धरती है, यह तो पूरी भरी हुई है। जो बाबा गुरु नानक बादशाह जी थे, उन्होंने उस प्याले के अंदर चमेली का फूल रख दिया कि इसकी अपनी महक है, यह महक से उस प्याले में बढ़ोतरी तो करेगा परन्तु उसको छलकने नहीं देगा। यही ख़ूबसूरती थी बाबा गुरु नानक बादशाह की कि वह यहां अपना पैगाम लेकर आये और अपने साथ लोगों को जोड़ा।

भाई गुरदास की वार में ज़िक्र आता है,

अगों पीर मुलतान दे दुध कटोरा भर लै आई।
बाबे कढ कर बगल ते चंबेली दुध विच मिलाई।
जिउ सागर विच गंग समाई ॥
(भाई गुरदास)

मुल्तान के पीर दूध का कटोरा भर कर लाये।
बाबे ने अपनी बगल से चमेली का फूल निकाल कर दूध पर रख दिया
जैसे कोई नदी समुद्र में जा मिलती है।
(भाई गुरदास)

गुरु नानक ने चमेली का फूल दूध पर रख कर इशारे से संदेश दिया कि रूहानी विवेक अनंत है। इसलिये बहुत सारी सोचें इत्तेफ़ाक से एक-दूसरे के संगियों के तौर पर बिना टकराव से रह सकती हैं, जो किसी नदी के समुन्द्र में मिल जाने के समान है जिसका पानी विस्थापित नहीं होता।

गुरु नानक के बराबरी वाले फ़लसफ़े ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' का रूप धारण किया, जो रूहानी आरज़ूमंदों की बाणी का भंडार है। इसमें विभिन्न मज़हबों, तहज़ीबों और सामाजिक तबकों के संत और अभिलाषी शामिल हैं। गुरु नानक के दियानत वाले उसूलों की मिसाल देने के लिये 'गुरु ग्रंथ साहिब' में शामिल सबदों का हवाला दिया जाता है।

यह दिलचस्प है कि हज़रत शाह शमसुद्दीन सब्ज़वारी की दरगाह के अंदर की दीवारों पर गुरुमुखी में सिखों के नाम लिखे हुये हैं। पंजाबी लिखने के लिये यह लिपि अब पूर्वी पंजाब में उपयोग की जाती है। इस दरगाह के सेवादार ने बताया कि वह उन्नीस सौ सैंतालीस से पहले के हैं जब गुरु नानक की याद में सिख इस दरगाह पर अकीदत के लिये आते थे।

गुरु नानक ने मुल्तान से चिनाब के पूर्व की ओर झंग शहर का सफ़र किया।

हम अब मुल्तान से झंग जिले के गांव नानक सिर जा रहे हैं।

जब उन्नीस सौ सैंतालीस में उप-महाद्वीप का मज़हबों की बुनियाद पर बंटवारा हुआ तो हिंदु और सिख बिरादरी पूर्व की ओर इंडिया पलायन कर गई। इसी तरह मुसलमानों का पलायन पश्चिम की ओर उस इलाके में हुआ जो पाकिस्तान बन गया। कईयों ने यहां आ करके उजाड़ पड़ी इमारतों में पनाह ले ली, जैसे कि इस ऐतिहासिक गुरुद्वारे की इमारत है।

अमरदीप सिंह: झंग शहर के पास के इस गांव का गुरु नानक के नाम पर नानक सिर नाम रखा गया है। यह गुरुद्वारा गुरु नानक की याद में बनाया गया था।

अमरदीप सिंह: ग्रामीणों से चर्चा करते हुये मैंने उनसे पूछा कि क्या वे इस गुरुद्वारे के ऐतिहासिक महत्व के बारे में जानते हैं। वे अनजान थे। इसके बावजूद वे सत्कार के तौर पर यहां प्रतिदिन दीप जलाते हैं।

गांव वाले हमें ख़ादिम हुसैन के पास ले गये जो सत्रह साल की उम्र में बंटवारे के दौरान यहां आकर बस गये थे।

ख़ादिम हुसैन: जब मैं यहां आया तो मेरी उम्र सोलह या सत्रह साल थी। बाबे नानक के बारे में हमने अपने बुज़ुर्गों से सुना कि बाबा गुरु नानक साहिब, इस जगह पर एक जंगल था, इस जगह पर आये, उन्होंने अन्न-पानी खाया, खा कर शाम के समय ठंडा होने पर चले गये। जब हम यहां आये, यहां चिराग़ जलते थे। आज भी ग्रामीण यहां चिराग जलाते हैं।

ग्रामीणों को ऐसे दीपक जलाने को मैं अहंकार को जलाने की निशानी के तौर पर देखता हूं और रूहानी जागरूकता समझता हूं। ये उम्मीद जगाते हैं कि बीते समय में की गई ग़लतियों को आने वाले समय में दोहराया नहीं जायेगा।

नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥
मुइआ जीवदिआ गति होवै जाँ सिरि पाईऐ पाणी ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

इबादत से पहले कोई वजू करता है और कोई स्नान करता है लेकिन रौशन-ख़याल मनुष्य हमेशा अपने विचार स्पष्ट करता है।
विकारों से छुटकारा रिहाई के समान है। अहंकार का मैल को धोना सफ़ाई के समान है।
(राग माझ, गुरु नानक)

कुछ श्रद्धालु नमाज़ पढ़ने से पहले वजू करते हैं। नमाज़ पढ़ने के लिये घुटने टेकना अपने अहंकार को समर्पण करने जैसा है। कुछ श्रद्धालु 'पूजा' करने से पहले स्नान करते हैं। पूजा करना अपनी चेतना को जगाने वाला कर्म है। गुरु नानक कहते हैं कि रौशन-ख़याल मनुष्य अहंकार से छुटकारा पा कर अपनी सोच को साफ़ करते हैं और अपनी चेतना को जगाते हैं।

गुरु नानक ने झंग से दिपालपुर का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर झंग से दिपालपुर का सफ़र कर रहे हैं जो उकारा जिले का कस्बा है।

हम छोटा ननकियाना गुरुद्वारे वाली पुरानी जगह पर जा रहे है जहां गुरु नानक के दिपालपुर आने की याद में गुरुद्वारा बनाया गया था। सन उन्नीस सौ सैंतालीस में मज़हबी बुनियाद पर हुये, इंडियन उप-महाद्वीप के

बंटवारे के दौरान यह गुरुद्वारा वीरान हो गया और उसके बाद से यह मुहाजिर परिवारों की रिहायश बना हुआ है।

खंडहर हुये इस गुरुद्वारे की दीवारों पर उकेरे गये 'गुरु ग्रंथ साहिब' के सबदों पर समय का असर नहीं हुआ है।

आपे हर-ए-इक रंग है आपे बहू रंगी।
जो तिस भावे नानका साई गल चंगी।
(गुरु राम दास)

कर्ता एक रंग है और बहु रंगी भी है।
गुर नानक ने फ़रमाया कि कुदरत के नियमों के मुताबिक हुई बात ही अच्छी है।
(गुरु राम दास)

मैं सोचता हूं कि इस में कोई गहरा संदेश है कि अगर कोई समाज रूहानी गुणों में गहरा रचा है तो वह विनाशकारी ताकतों के ख़िलाफ़ दृढ़ता से खड़ा होने का बल जोड़ता है।

जिउ गोडहु तिउ तुम्म सुख पावहु किरत न मेटिआ जाई ॥
(राग बसंत, गुरु नानक)

कोई विचार में जितना गहरा उतरता है, उतना ही सुख पाता है। यह गहन कर्म नकारा नहीं किया जा सकता।
(राग बसंत, गुरु नानक)

'गहरा उतरने' का मायने है अपनी सामर्थ्य के मुताबिक पुरज़ोर उपाय करना। गुरु नानक फ़रमाते है कि अपनी किरत के बारे में विचार में मनुष्य जितना गहरा उतरता है, उतना ही उस को सुख का अहसास होता है। जितना सुख हमारे अंदर होगा, उतना सुख हमारे आस-पास होगा।

गुरु नानक ने दिपालपुर से शेर गढ़ का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम दिपालपुर से शेर गढ़ का सफ़र कर रहे हैं।

हम कादरी सिलसिले के सूफ़ी संत दाऊद किरमानी के मज़ार पर जा रहे हैं जो गुरु नानक के समकालीन थे।

'मिहरबान जन्मसाखी' में ज़िक्र आता है कि शेर गढ़ में गुरु नानक की मुलाकात दाऊद किरमानी से हुई थी जो रूहानी पक्ष से पहुंचे हुये इंसान थे। गोष्ठी के दौरान दाऊद किरमानी ने ज़िक्र किया कि लाहौर वाले सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी उनके मुर्शिद थे।

इस गोष्ठी के दौरान गुरु नानक को लाहौर जाकर सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी से मिलने की चाहत पैदा हुई। हम शेर गढ़ में सय्यद खुर्शीद मुस्लिम साहिब से मिले जो दाऊद किरमानी की मज़ार के मख़दूम हैं।

सय्यद खुर्शीद मुस्लिम: हज़ूर गुरु नानक साहिब मुल्तान से दीपालपुर और दीपालपुर से शेर गढ़ आये थे। शेर गढ़ में जनाब दाऊद वली किरमानी का रोज़ा मुबारक है। यह उस समय उनका ठिकाना था। यहीं पर जनाब गुरु नानक साहिब और हज़रत दाऊद वली किरमानी की मुलाकात हुई थी। जनाब दाऊद वाली किरमानी के आबा-ओ-अजदाद सऊदी अरब से ईरान, ईरान से कुम, कुम से सिंध, सिंध से यहां पहुंचे थे। जनाब बाबा गुरु नानक साहिब भी चाहते थे कि इंसान आपस में इकट्ठे प्यार-मुहब्बत से रहें। यह हर रोज़ की खट-खट, लड़ाई-झगड़ों से गुरेज़ करें और सुख का वक्त गुज़ारें। जनाब दाऊद वली साहिब मुसलमान थे, वो भी चाहते थे कि इंसानियत को सुख दो। इंसान को इंसान समझ कर प्यार करो, मुहब्बत करो, एक-दूसरे के साथ ज़्यादती ना करो। इस मिशन के तहत उनकी मुलाकात हुई। कुछ इनके ख़यालात मिलते थे तो वे मिले थे।

ग्रीक बोली का इज़हार 'मैटामॉर्फोसिस' दो शब्दों के मेल से बना है। 'मैटा' का मायने है 'बाद' और 'मॉर्फ' का मायने 'रूप' है। यह विकास के पड़ावों की निशानदेही करता है। इसका मायने उस तरकीब से मिलता-जुलता है जिस के तहत एक कीड़े का विकास तितली के रूप में होता है।

गुरु नानक ने अपने बाणी 'जप' में रूहानी 'मैटामॉर्फोसिस' को पांच विस्तार 'खंड' के तौर पर बयान किया हैं। यह मानव मन के अपने-आप से एक-सुर होने के लिये ज़रुरी विकास के पड़ाव हैं। यह पड़ाव 'धर्म खंड' से शुरू होते हैं और 'ज्ञान खंड', 'सरम खंड', 'करम खंड' से गुज़रते हुये 'सच खंड' के शिखर तक पहुंचते हैं।

'धर्म' संस्कृत का शब्द है जिसका मायने फ़र्ज़ निभाना और मदद करना है। गुरु नानक ने 'धर्म खंड' के विस्तार के बारे में फ़रमाया है कि रोज़ाना फ़र्ज़ को निभाते वक्त नेकी से जुड़े रहना और इस का पक्ष लेना सबसे अहम है।

धरम खंड का एहो धरम ॥
(जप, गुरु नानक)

नेकी 'धर्म खंड' का धर्म है।
(जप, गुरु नानक)

माना जाता है कि शेर गढ़ से गुरु नानक ने मेघा और चुनियां गांवों के रास्ते सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम शेर गढ़ से मेघा और चुनियां गांवों से गुज़र रहे हैं। मेघा में खस्ताहाल और वीरान छोटा ननकियाना गुरुद्वारा है जो गुरु नानक की याद में बनाया गया था।

चुनियां का यह गुरुद्वारा कहीं ऐतिहासिक तौर पर दर्ज नहीं है।

'ज्ञान' संस्कृत का शब्द है जिसका मायने बोध है। मानव के पास कुछ ज्ञान जन्मजात होता है और बाकि हासिल किया जाता है। गुरु नानक ने कहा कि "ज्ञान खंड" के विस्तार तक पहुंचकर मनुष्य ज्ञान की अनंत किस्मों से संपन्न हो जाता है, लेकिन ज्ञान अपने-आप में नाकाफ़ी है। इसको आत्म पड़ताल के माध्यम से हासिल विवेक से जोड़ना पड़ता है। यह किसी हुनरमंद तीरंदाज़ की कला है जो कमान को अपनी तरफ खींचता है ताकि तीर निशाने पर मारा जा सके।

गिआन खंड महि गिआन परचंड ॥
(जप, गुरु नानक)

'ज्ञान खंड' में आध्यात्मिक ज्ञान ही प्रचंड है।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक ने मानक देकी और कंगनपुर गांवों से अपना सफ़र जारी रखा।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम मानक देकी और कंगनपुर गांवों से सफ़र कर रहे हैं जो एक-दूसरे के करीब हैं।

हम मानक देकी के गुरुद्वारे में जा रहे हैं जो गुरु नानक की याद में बनाया गया है। सन उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे में यह स्थान वीरान हो गया था और इसका बचा हुआ गुरुद्वारे का एकमात्र कमरा अब एक अप्रवासी परिवार का निवास स्थान बना हुआ है। कथा के अनुसार, गुरु नानक के आगमन के समय इस गांव के निवासी विनम्र और नैतिक थे। माना जाता है कि यहां से जाते समय गुरु ने ग्रामीणों से कहा, "उजड़ जाओ।"

पास के गांव कंगनपुर में हम उस जगह जा रहे हैं जहां मल जी साहिब गुरुद्वारा हुआ करता था जो गुरु नानक की याद में बनाया गया था। सन उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे में यह गुरुद्वारा वीरान हो गया था और तब से एक मुहाजिर परिवार का ठिकाना बना हुआ है। कथा के अनुसार, गुरु नानक के आगमन के समय, इस गांव के निवासी असभ्य और अनैतिक थे। ऐसा माना जाता है कि यहां से जाते समय गुरु ने ग्रामीणों से कहा, "बसते रहो।"

सामाजिक स्तर पर देखा-देखी वाला व्यवहार एक व्यक्ति के कर्मों या जज़्बात को बिना सोचे-समझे प्रभावित करता है। गुरु नानक ने नेक ग्रामीणों की सराहना की और इच्छा ज़ाहिर की कि उनकी नेकी का वितरण बाकी लोगों में होना चाहिये। इसलिये उन्हें उजड़ जाना चाहिये और साथ ही वह चाहते थे कि अहंकार से भरे ग्रामीणों को घेराबंद रहना चाहिये ताकि उनके नकारात्मक मिजाज़ से दूसरे को संक्रमण ना हों।

अमरदीप सिंह: मानव संचार में गुणी व्यवहार मनुष्य के रूहानी विकास में अहम भूमिका अदा करता है। इस तथ्य की तस्दीक गुरु नानक ने कंगनपुर और मानक देकी के संदेश में की।

संस्कृत के शब्द 'सरम' का मायना है 'सादगी' जिसका एक मायना 'नम्रता' भी है। गुरु नानक फ़रमाते हैं कि 'सरम खंड' का विस्तार सृजना के सभी रूपों को अपने में समाहित कर लेता है जो नम्रता का शिख़र है। इससे मुझे कोयल याद आती है जो विनम्र होने के कारण छुपी रहती है परन्तु निःस्वार्थ होकर सुरीली आवाज़ निकाल कर ख़ुशी बांटती रहती है।

सरम खंड की बाणी रूप ॥
(जप, गुरु नानक)

'सरम खंड' के विस्तार में सृजना का हर रूप ख़ूबसूरत है।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक ने उत्तर की ओर सफ़र जारी रखा और कसूर से गुज़रे।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम कसूर जा रहे हैं जो इंडिया-पाकिस्तान की सरहद के नज़दीक बसा शहर है।

प्राचीन इतिहास में ज़िक्र आता है कि महाकाव्य 'रामायण' वाले राजा राम और उनकी पत्नी सीता के राजकुमार कुश ने कसूर की नींव रखी थी। यह शहर सत्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध सूफ़ी संत बुल्ले शाह की आरामगाह के तौर पर भी मशहूर है।

कसूर जिले में कई गुरुद्वारे थे जो उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे के बाद भुला दिये गये हैं। हम कालू खाड़ा जा रहे हैं जहां सभी प्रकार की उपासना और अक़ीदे का साझा स्थान है, जिसे गुरुद्वारा राम थमन कहते हैं। यह गुरु नानक की मौसी के पुत्र राम थमन की याद में बनवाया गया था।

अमरदीप सिंह: कसूर जिले में गुरु नानक के इस इलाके में आने की याद में बहुत सारे गुरूद्वारे बनाये गये थे। अब गुरु नानक की याद में राम थमन गांव का यह स्थान ही बचा है।

यह स्थान बाहर से मंदिर जैसा दिखता है लेकिन इस इमारत की भीतरी दीवारों पर शिलालेख इशारा करते हैं कि इस स्थान की मानता गुरूद्वारे के तौर पर थी। इससे अंदाज़ा होता है कि यह 'नानक पंथियों' की संगत का केंद्र था। यहां गुरु नानक के हिंदू और सिख पैरोकार आते थे।

अमरदीप सिंह:

ੴ सतिगुर प्रसादि॥ गुरद्वारा बाबा राम थमन, सम्मत ४४४ नानकशाही
कर्ता हाज़रा-हज़ूर है जो रहबर की रहमत से प्रकट होता है। गुरुद्वारा बाबा राम थमन, संवत 444 नानकशाही।

राम थमन में इस सर्व-साझी इबादत वाले स्थान की डयोढ़ी नानकशाही संवत चार सौ चौतालिस में बनाई गई थी। मौजूदा दौर में गांव की मुसलमान बिरादरी ने इस स्थान पर गुरु नानक और राम थमन की याद में सालाना बैसाखी मेला लगाने का दस्तूर कायम रखा है।

संस्कृत के शब्द 'करम' का मायना है 'अमल' या 'लेख'। 'बाणी' का मायना "नेक इरादा" बनता है। गुर नानक फ़रमाते हैं कि 'करम खंड' के विस्तार में सभी अमलों मे रूहानी इरादों के तहत किये अमल ही सबसे ताकतवर है।

करम खंड की बाणी जोर ॥
(जप, गुरु नानक)

'करम खंड' के विस्तार में नेक इरादों का ज़ोर है।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कसूर से मांगा का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम कसूर से मांगा में छोटा ननकियाना गुरुद्वारे के खंडहर देखने जा रहे हैं। यह गुरुद्वारा गुरु नानक की यहां आने की याद में बनाया गया था और उन्नीस सौ सैंतालीस के बंटवारे के दौरान वीरान हो गया था। बाद में इस ज़मीन का कुछ हिस्सा नज़दीक के अलीगढ़ पब्लिक स्कूल की इमारत बनाने के लिये इस्तेमाल कर लिया गया था। गुरुद्वारे का सरोवर अब मछली पालन महकमा मछली पालने के लिये इस्तेमाल करता है।

संस्कृत के शब्द 'सच' का मायने है 'सत्य'। इसका मतलब तथ्यों और हकीकत से एकसुर होना है। गुरु नानक फ़रमाते हैं कि 'सच खंड' के विस्तार में मनुष्य को अंतिम सच का अहसास होता है कि निरंकार का वास सृजना के कण-कण में है। इस विस्तार में पहुंचकर ही मनुष्य मुक्ति के पड़ाव पर पहुंचता है।

सच खंड वसै निरंकार ॥
(जप, गुरु नानक)

सच के विस्तार में निरंकार कायनाती ऊर्जा का वास है।

(जपु, गुरु नानक)

गुरु नानक ने मांगा से लाहौर का सफ़र किया। गुरु नानक अपनी दूसरी उदासी के दौरान भी लाहौर आये थे।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर मांगा से लाहौर जा रहे हैं।

'मेहरबान जन्मसाखी' में दर्ज है कि गुरु नानक, सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी से मिलने लाहौर आये थे, जिसके बारे में उन्होंने शेर गढ़ में उनके श्रद्धालु दाऊद किरमानी से सुना था।

अमरदीप सिंह: हम उस जगह पर हैं जहां सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी को दफ़नाया गया है। गुरु नानक उनको लाहौर में रावी नदी के तट पर मिले और दोनों ने रूहानी गोष्ठी की।

लाहौर वाले सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी, सय्यद जमाल-उद-दीन ग़िलानी के सुपुत्र थे जो पंद्रहवी शताब्दी में बग़दाद से लाहौर आ बसे थे। वह कादरी सूफ़ी सिलसिले से संबंध रखते थे जिसकी शुरुआत बारहवीं सदी के संत, पीर मोहिउद्दीन अब्दुल कादिर ग़िलानी ने बग़दाद में की थी। गुरु नानक अपनी तीसरी उदासी के दौरान बग़दाद में पीर मोउद्दीन अब्दुल कादिर ग़िलानी की दरगाह पर गये थे।

ज़ाहिद बशीर हाशमी: हज़ूर बाबा जी सरकार का ताल्लुक़ बग़दाद शरीफ वाले अब्दुल कादिर ग़िलानी से था। आप उनकी संतानों में से हैं। आप की करामात, रूहानियत के हवाले से आप का नाम अब्दुल कादिर सानी रख दिया, दूसरा अब्दुल कादिर। बाबा जी गुरु नानक साहिब के साथ उनकी मुलाकात रावी के किनारे पर हुई थी। फ़कीरों का मज़हब इंसानियत होता है। इस में इनको किसी मज़हब, पंथ, रंग, नस्ल से कोई लेना-देना नहीं होता।

गुरु नानक ने सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी के साथ गोष्ठी के दौरान बयान किया कि जीवन के सभी सुख गतिमान हैं और सिर्फ इलाही ऊर्जा में एक होने का सुख ही स्थायी है।

सभ रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
खट तुरसी मुख बोलणा मारण नाद कीए ॥
छतीह अंमृत भाउ एक जा कउ नदर करेइ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

सभी रस मीठे हैं। सुनने की योग्यता नमकीन की तरह होती है।
खट्टा-मीठापन रचनात्मक वाणी है और चटपटापन इलाही की समझ के समान है।
अमृत के शर्बत के छत्तीस रस वहदत के विभिन्न फ़लसफ़े हैं।जो विवेक की रहमत से संपन्न मनुष्य के हिस्से आते हैं।
(सिरी राग, गुरु नानक)

कुदरत में विभिन्न स्वाद भरे हुये है जो स्वाद इंद्रियों में लुत्फ़ उभारते हैं। जैसे गन्ने की मिट्ठास है, जैसे नमक का नमकीनपन है, जैसे नींबू की खटास है और मिर्च का करारापन है। गुर नानक फ़रमाते हैं कि इसी तरह विभिन्न फ़लसफ़ों का इरादा रूहानी सोच को उकसाता है, जिससे विविध सृजना को मानने से लुत्फ़ में बढ़ोतरी होती है।
गुरु नानक ने लाहौर से सियालकोट का सफ़र किया।
हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर लाहौर से सियालकोट जा रहे हैं।

दूसरी उदासी के दौरान गुरु नानक सियालकोट में मूला खत्री से मिले थे और उन्होंने कुछ समय इकट्ठे सफ़र किया था। 'मिहरबान जन्मसाखी के मुताबिक गुरु नानक दूसरी बार सियालकोट से गुज़रते हुये मूला खत्री के घर गये। मूला खत्री की पत्नी ने गुरु नानक का गर्मजोशी से स्वागत किया लेकिन उन्हें डर था कि उनका पति फिर से सफ़र पर जाने का फ़ैसला कर लेगा। इस कारण उसने कह दिया कि उसका पति सियालकोट में नहीं है। इस फरेब के बारे में सुन कर मूला खत्री ने प्राण त्याग दिये। मूला खत्री की मौत के बारे में सुनकर गुरु नानक अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिये उनके घर गये। सच्ची और सदा साथ निभाने वाली निष्ठा का संदेश देने के लिए, गुरु नानक ने गाया,

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिर धर तली गली मेरी आउ ॥
इत मारग पैर धरीजै ॥
सिर दीजै काण न कीजै ॥
(सलोक, गुरु नानक)

अगर प्रेम का खेल खेलने की इच्छा है

तो अपने अहंकार को हथेली पर रख कर इस मार्ग पर पैर रखें।
जब इस मार्ग पर पैर रखें
तो अहंकार त्याग करने में संकोच न करें।
(सलोक, गुरु नानक)

वृक्ष निःस्वार्थ होकर फल देता है; इसी गुण को प्रेम का दर्जा हासिल है। भंवरा शहद की तलाश में फूलों की ओर खींचा जाता है; इस गुण को मोह करार दिया जा सकता है। प्रेम तो करुणा से उपजता है जबकि दूसरी तरफ मोह की उपज अहंकार से होती है। गुरु नानक फ़रमाते हैं कि अगर कोई प्रेम का खेल खेलना चाहता है तो अहंकार भरे मन को बिना किसी संकोच के समर्पित करना लाज़मी है।

सियालकोट से गुरु नानक करतारपुर के लिये निकल पड़े।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर सियालकोट से करतारपुर जा रहे हैं।

करीब दो साल की लंबी उदासी के बाद गुरु नानक करतारपुर लौट आये। पंजाब में और उसके आसपास के स्थानों पर जाने के लिये चौथी उदासी पंद्रह सौ पच्चीस ईस्वी में शुरू हुई और तकरीबन दो वर्षों में पंद्रह सौ छब्बीस ईस्वी में मुकम्मल हुई। उस समय गुरु नानक की आयु तकरीबन सत्तावन वर्ष थी।

यह अंदाज़ा है कि पहली उदासी शुरू करने के समय पंद्रह सौ चार ईस्वी में गुरु नानक पैंतीस वर्ष के थे और पंद्रह सौ छब्बीस में चौथी उदासी मुकम्मल करने के समय वह सत्तावन साल के थे। उन्होंने बाइस साल के दौरान दूर-दूर तक का सफ़र किया।

चौथी उदासी पर जाने से पहले गुरु नानक ने भाई लहना को करतारपुर की बिरादरी की सेवा-संभाल करने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। करतारपुर लौटने के बाद गुरु नानक ने डेरे के नेतृत्व का काम जारी रखा; इत्तेफ़ाक वाली ज़िंदगी बसर करो, नेक कमाई करो, और रूहानी अमल करो। 'मिहरबान जन्मसाखी' में दर्ज है कि इस बस्ती की महिमा फैल रही थी।

जन्मसाखी साहित्य में यह दर्ज है कि सुल्तानपुर के मोदीखाने में गुरु नानक के साथ काम करने वाला कोई बेनाम साथी उनसे मिलने करतारपुर आया। उस साथी ने गुरु नानक से पूछा कि उन्होंने उदासियों से क्या हासिल किया और तजुर्बा साझा करने के लिए अर्ज़ किया। गुरु नानक ने जवाब दिया,

हिरदै नाम नाही मन भंग ॥
अनदिन नाल पिआरे संग ॥
हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥
गुर परसादी हरि रस पाइआ नाम पदारथ नउ निध पाई ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जब विवेक दिल और दिमाग से अलग ना हो तब हर पल आरज़ूमंद के अंदर चैन का वास होता है।
हे प्यारे, मुझे अपनी शरण में रख लो।
विवेकदानी की रहमत से रस मिलता है
और आत्म पड़ताल के भंडारे हासिल होते हैं।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया है कि सच्ची प्राप्ति अभौतिक 'दौलत' में हासिल होती है जो मनुष्य आत्म पड़ताल के माध्यम से अर्जित करता है; मनुष्य को अमलों के रास्ते से विवेक और आगे मुनाफ़ा मिलता है; इलाही की रहमत से शरण मिलती है; तजुर्बे से ज्ञान-भंडारा मिलता है।

'मेहरबान जन्मसाखी' में ज़िक्र आता है कि दूसरा गुमनाम दोस्त करतारपुर में गुरु नानक को मिलने आया और वहां की तर्ज़-ए-ज़िंदगी को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिन गुरु नानक के साथ बिताने के बाद वह अपने घर चला गया। उसने अपने परिवार के सदस्यों को करतारपुर की परंपरा के अनुसार 'सत करतार' कह कर संबोधित किया, जिसका मायना था कि केवल करतार ही सत्य है। कहा जाता है कि उसने गुरु नानक के सार्वभौमिक फ़लसफ़े का संदेश गांव वासियों तक पहुंचाते हुये अंतिम सांस ली। अपने मित्र की मृत्यु होने की ख़बर सुनकर गुरु नानक ने गाया,

नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोट ॥
भीतर चोर बहालिआ खोट वे जीआ खोट ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

नानक ने कहा कि देह गिर कर मिट्टी का ढेर हो जाती है जो मिट्टी के कोट समान है।
अगर अंदर चोर बसता है तो जिस्म का अस्तित्व खोट है।

(राग सारंग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि देह मिटटी की बनी है और मौत के बाद मिट्टी का ढेर हो जाती है। उसी प्रकार मन में बसी द्वैत भी शरीर के साथ ख़त्म हो जाती है। गुरु नानक ने ज़ोर देकर कहा कि शरीर का अस्तित्व और उसकी इच्छायें अस्थायी हैं।

संचार के सहज माध्यम में अस्तित्व पनपता है। गुरु नानक कुदरत के इस नियम का सत्कार करते थे। अपनी उदासियों के दौरान, कई वर्षों तक रूहानी आरज़ूमंदों के साथ संवाद रचाते हुये गुरु नानक ने अकीदा, 'मूल मंत्र' बना लिया जो उनके विवेक का मूल बयान करता था। यह अक़ीदा ही गुरु ग्रंथ साहिब का पहला सबद है। 'मूल' का मायना बुनियादी और 'मंत्र' का मायना मन की युक्ति है। अपने अद्वैतवाद के फ़लसफ़े की तसदीक करने के लिये गुरु नानक ने मूल मंत्र के शुरु में अंक के तौर पर '1' जोड़ा कि जीवन के हर रूप में उस हाज़रा-हज़ूर की ज्योत समाई है।

ੴ सत नाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद ॥
(जप, गुरु नानक)

कर्ता हाज़रा-हज़ूर है। वह सच है। सृजना में नाज़िर है। बेख़ौफ़ है। तेरा-मेरा से ऊपर है। युगों-युग अटल है। जन्म और मृत्यु के चक्र से बाहर है। वह स्वयं रौशन है। ज्ञान की रहमत से साकार होता है।
(जप, गुरु नानक)

विवेक की अमृतधारा को आगे बढ़ाने के लिए, गुरु नानक ने अगुआई की मशाल भाई लहना को संभाल दी और उनका नाम अंगद रख दिया जो संस्कृत का शब्द है जिसका मायना मानवीय जिस्म का अंग है। रूपक के तौर पर इसका मायना यह भी बनता है कि दोनों एक ही फ़लसफ़े के अंगीकार थे।

बरसै अंमृत धार बूँद सुहावणी ॥
साजन मिले सहज सुभाइ हरि सिउ प्रीत बणी ॥
(राग तुखारी, गुरु नानक)

अमृत की धार से विवेक की वर्षा होती है। इसकी बूंदें सुखद होती हैं।
रौशन-ख़्याल से मेल के दौरान मनुष्य सहज स्वभाव से ही इलाही के प्यार में बंध जाता है।

(राग तुखारी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने इकट्ठी की गई पोथियों को गुरु अंगद को सौंप दिया जो रौशन-ख़्याल लोगों के शब्दों का भंडार था। इस इशारे से सारी बिरादरी को अहसास हो गया कि गुरु नानक के सांसारिक प्रस्थान का समय निकट आ गया है।

मौत ज़िंदगी का अहम पड़ाव है। इन दोनों का जोड़ अटूट है जैसे सांस लेने और छोड़ने की क्रियायें एक ही सांस में वास करती हैं। चेतना अनंत है। मौत समेत ज़िंदगी का हर पक्ष इलाही की बक्शीश है। गुरु नानक फ़रमाते हैं कि मौत को चाहे अशुभ माना जाता है, लेकिन जब विवेक हासिल हो जाता है, तो मौत भी शुभ-चिंतक हो जाती है।

ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबद हरि रमणं ॥
मति तत गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मन रमणं ॥२॥
चल चित वित भ्रमा भ्रमं जग मोह मगन हितं ॥
थिर नाम भगत दिड़ं मती गुर वाक सबद रतं ॥
(राग गुजरी, गुरु नानक)

हे मन, मौत भी शुभ चिंतक है। विवेक के सबदों पर सोच-विचार करो।
बुद्धि के साथ ज्ञान कल्याणकारी और शोभा का ख़ज़ाना होता है। आत्म पड़ताल पर विचार करें।
चंचल मन दुविधा में भटकता रहता है। यह भौतिक वस्तुओं की वासना में उलझा रहता है।
स्थिर सोच से ही स्थिरता हासिल होती है। रूहानी विवेक और संवाद बेशकीमती हीरे हैं।
(राग गुजरी, गुरु नानक)

'जन्मसाखी' लेखन के मुताबिक, गुरु नानक नश्वर संसार में सत्तर वर्षों तक रहे, चौदह सौ उनहत्तर से पंद्रह सौ उन्तालीस तक।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक ने अपनी उदासियों के दौरान वहदत का जो संदेश दिया, वह करतारपुर के इस स्थान में झलकता है। सीना-ब-सीना बिर्तांत में दर्ज है कि जब गुरु नानक जोति-ज्योत समाये तो हिंदुओं और मुसलमानों ने उनकी अंतिम रस्में अपने-अपने मज़हबी दस्तूर के मुताबिक करने का दावा किया। इस दावे में निहित है कि गुरु नानक सभी के सांझे थे।

गुरु नानक की इस शांतिपूर्ण इलाके में गुज़ारी ज़िंदगी की याद में करतारपुर गुरुद्वारा बनाया गया था। यह स्थान गुरु नानक के पैरोकारों के लिये रूहानी ठिकाना बन गया है। उप-महाद्वीप में उन्नीस सौ सैंतालीस की रैडक्लिफ रेखा के साथ उप-महाद्वीप के विभाजन ने कई ऐतिहासिक स्थलों की किस्मत का फ़ैसला किया। करतारपुर उस समय पाकिस्तान में आ गया। मज़हबी बुनियाद पर हुये पलायन के कारण करतारपुर गुरुद्वारा वीरान हो गया। इसको उन्नीस सौ पच्चानवे में पुनः स्थापित किया गया।

इस गुरूद्वारे की मुरम्मत की गई और दो हज़ार उन्नीस में गुरु नानक के पांच सौ पच्चानवें जन्म दिवस के मौके पर इस स्थान को मौजूदा रूप दिया गया।

गुरु नानक ने वहदत की मशाल बुलंद की और अनेकता में एकता का संदेश दिया। उनका मार्ग दुनिया की एकता के लिये आशा की किरण है।

जहाँ की बुझती हुई निगाहों को, जगमगाता है बाम-नानक।
ना पाक कोई, ना कोई नापाक, कोई ऊँचा, ना कोई नीचा।
(आनंद नारायण मूरला)

मानवता की बुझ रही ज्योत को नानक का विवेक जगमगाता है।
ना कोई पाक है और ना कोई नापाक। ना कोई ऊंचा है और ना कोई नीचा है।
(आनंद नारायण मुला)

गुरु नानक के गहरे फ़लसफ़े के मूल को समझने का यह विनम्र प्रयास, उनके पदचिन्हों पर किया गया सफ़र हमारे लिये कई निराले रहस्यों को खोलने का सबब बना। गुरु नानक के 'रूपक' को समझने की यह तरकीब हमारे लिये पहली की सीख से अशिक्षित होने, नया सीखने और ज़िंदगी को अलग-अलग कोणों से सोचने-समझने में सहायक हुई है।

हमारे लिए सबसे बड़ा मुक्तिदायक अनुभव यह अहसास है कि संपूर्ण ब्रह्मांड एक विस्तृत संयोग है और इसके जलवे का अंदाज़ा लेने की कुंजी सच्चा आचरण है।

आप अपने 'रूपक' पर विचार करें।

एको धरम दृड़ै सच कोई ॥
(ਰਾਗੁ ਬਸੰਤ, ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ)

नेकी ही एकमात्र धर्म है जो सार्वभौम नियम है।
(राग बसंत, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड २४: बाम-ए-नानक (नानक की ज्योत)

जैसा कि इस एपिसोड में विस्तार से बताया गया है, चर्चा बिंदु गुरु नानक की ऐतिहासिक यात्रा और दार्शनिक समझ की खोज के लिए एक ढांचा प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उनकी यात्राओं, रुहानी नेताओं के साथ उनके संपर्कों, और करतारपुर समुदाय की स्थापना की समीक्षा करके, हम समझ सकते हैं कि उनकी शारीरिक यात्रा किस प्रकार उनकी रुहानी दृष्टि का प्रतिबिंब थी। दार्शनिक प्रश्न उनके रुहानी अनुभव, कर्म और ध्यान के संतुलन, प्रेम और मोह के बीच के अंतर, और उनके अनुभवजन्य ज्ञान के सार पर केंद्रित हैं। गुरु नानक ने धार्मिकता, सत्य और मानवता की एकता पर बल दिया, जो संदेश धार्मिक सीमाओं से परे गूंजते हैं। उनकी जागरूकता एक संयुक्त संसार के लिए आशा की किरण बनी हुई है। ये चर्चा बिंदु हमें प्रेरित करते हैं कि हम उनके कालातीत ज्ञान के माध्यम से रुहानी समझ, मानवीय संबंधों और समकालीन समाज में अर्थपूर्ण जीवन जीने के तरीके पर गहराई से विचार करें। गुरु नानक ने विविधता में एकता की भावना को बनाए रखा।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की चौथी यात्रा की समयरेखा और भौगोलिक विस्तार क्या था?

इस एपिसोड में पंजाब और उसके आसपास गुरु नानक की चौथी यात्रा के महत्व को उजागर किया गया है, जो सन् १५२५ ईस्वी में लगभग ५७ वर्ष की आयु में शुरू हुई और लगभग दो वर्षों तक चली, जो सन् १५२६ ईस्वी में समाप्त हुई। यह यात्रा उनकी विस्तृत यात्राओं का हिस्सा थी, जो लगभग २२ वर्षों तक, सन् १५०४ ईस्वी से सन् १५२६ ईस्वी तक चलीं। इस चौथी यात्रा के दौरान, गुरु नानक बीकानेर से उच, मुल्तान, झंग, दिपालपुर, शेर गड़, मेघा, चुनियां, मानक देकी, कंगनपुर, कसूर, माँघा, लाहौर, सियालकोट होते हुए करतारपुर लौटे। इस विशेष भौगोलिक मार्ग ने उनकी अंतिम यात्रा के दौरान उनके संदेश की गहराई और प्रभाव को किस प्रकार प्रभावित किया होगा?

२. गुरु नानक के संतों के साथ संपर्क ने रुहानी वार्तालाप को कैसे प्रभावित किया, और इन आदान-प्रदानों से कौन से स्थायी परिणाम सामने आए?

गुरु नानक ने अपनी यात्रा के दौरान विभिन्न सूफ़ी संतों के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप किए। उदाहरण के लिए, शेर गड़ में उन्होंने दाऊद किरमानी से भेंट की, जिसने उन्हें लाहौर में सय्यद अब्दुल कादिर ग़िलानी

से मिलने के लिए प्रेरित किया। दाऊद किरमानी की दरगाह के संरक्षक ने उल्लेख किया कि ये रुहानी नेता इस कारण जुड़े थे क्योंकि उनकी दृष्टि समान थी। सैयद खुर्शीद के अनुसार, गुरु नानक और दाऊद वली किरमानी चाहते थे कि इंसान आपस में प्रेम से रहें और एक-दूसरे के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करें। इन रहस्यवादी संतों के साथ हुए इन्टरफेथ वार्तालापों ने किस प्रकार गुरु नानक की रुहानी सहयोग और धार्मिक सीमाओं से परे सार्वभौमिक सच्चाइयों की खोज के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाया?

३. करतारपुर बस्ती का गुरु नानक के जीवन और विरासत में क्या महत्व था?

करतारपुर गुरु नानक की चौथी यात्रा का प्रारंभिक बिंदु और शिखर दोनों था। इस यात्रा पर निकलने से पहले, उन्होंने भाई लहना को वहाँ की समुदाय व्यवस्था सौंपी। यात्रा से लौटने के पश्चात, गुरु नानक ने समुदाय को सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने, नैतिक साधनों से जीविका चलाने, और रुहानी जीवन की समझ को गहरा करने की प्रेरणा दी। मेहरबान जनमसाखी में उल्लेख है कि ये बस्ती इन सिद्धांतों के कारण प्रसिद्ध हुई। समय के साथ, करतारपुर उन लोगों के लिए एक रुहानी प्रकाश-स्तंभ बन गया जो गुरु नानक के दर्शन से प्रभावित थे। इस समुदाय की स्थापना ने गुरु नानक की दार्शनिक समझ के व्यावहारिक रूप को किस प्रकार मूर्त रूप दिया?

४. सन् १९४७ का विभाजन गुरु नानक की यात्रा से जुड़ी ऐतिहासिक स्थलों को किस प्रकार प्रभावित करता है?

इस एपिसोड में बताया गया है कि भारत के सन् १९४७ के विभाजन ने गुरु नानक की यात्राओं से जुड़ी कई ऐतिहासिक स्थलों को प्रभावित किया। उदाहरणस्वरूप, दीपलपुर का छोटा ननकाना गुरुद्वारा त्याग दिया गया और अब वह प्रवासी परिवारों का निवास बन चुका है। इसी प्रकार, कंगनपुर का पूर्व मल जी साहिब गुरुद्वारा भी छोड़ दिया गया और अब वह एक प्रवासी परिवार का घर है। करतारपुर पाकिस्तान का हिस्सा बन गया और १९९५ में फिर से स्थापित होने से पहले वह भी वीरान हो गया था। यह स्थान २०१९ में अपने वर्तमान स्वरूप में विस्तारित हुआ। इन ऐतिहासिक स्थलों की वर्तमान स्थिति गुरु नानक की विरासत के राजनीतिक और धार्मिक सीमाओं के पार संरक्षण को किस प्रकार दर्शाती है?

५. गुरु नानक की उत्तराधिकार योजना की प्रक्रिया और महत्व क्या था?

अपने अंतिम समय से पहले, गुरु नानक ने भाई लहना को नेतृत्व सौंपा और उन्हें 'अंगद' नाम दिया, जो संस्कृत में "शरीर का अंग" दर्शाता है। इस नाम के माध्यम से उन्होंने साझा दर्शन में गहरी एकता का प्रतीक प्रस्तुत किया। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के अतिरिक्त, उन्होंने गुरु अंगद को 'पोथियाँ' भी सौंपीं, जो उनके रुहानी सबदों का संग्रह और अन्य आत्मबोध से युक्त व्यक्तियों के भजनों का संकलन थीं। इस

उत्तराधिकार प्रक्रिया ने गुरु नानक की रुहानी विरासत को उनके भौतिक अस्तित्व के परे निरंतरता और संरक्षण कैसे प्रदान किया?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक रुहानी रूपांतरण के पाँच खंडों का वर्णन कैसे करते हैं?

इस एपिसोड में गुरु नानक की रुहानी विकास की धारणा पर प्रकाश डाला गया है, जिसे 'खंड' कहा गया है, जो मानव मन को उसकी गहराई से जोड़ते हैं। धरम खंड में कर्तव्य पर बल दिया गया है, यह दर्शाते हुए कि धार्मिकता एक मौलिक जिम्मेदारी है। ज्ञान खंड में ज्ञान को मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि सरम खंड में विनम्रता पर ध्यान दिया गया है, जो सृष्टि की सुंदरता की सराहना करने के लिए प्रेरित करता है। करम खंड यह दर्शाता है कि हमारी नीयतें हमारे अनुभवों को पुनर्गठित कर सकती हैं, और सच खंड सत्य का क्षेत्र है, जहाँ निराकार ब्रह्मांडीय ऊर्जा एकता और उद्देश्य प्रदान करती है। ये खंड किस प्रकार रुहानी विकास के लिए एक ढांचा प्रदान कर सकते हैं, जो गहरी समझ, सार्थक संबंधों और हमारे जटिल संसार में पूर्णता की ओर ले जाए?

२. गुरु नानक के दर्शन में बाहरी क्रिया और आंतरिक ध्यान के संतुलन का क्या महत्व है?

गुरु नानक 'परवृत्ति' (बाहरी क्रिया) और 'निवृत्ति' (आंतरिक ध्यान) के संतुलन पर बल देते हैं, जहाँ धार्मिकता मार्गदर्शक शक्ति होती है। वे रस्सी पर चलने वाले कलाकारों का उदाहरण देते हैं, जो इस कला में पारंगत होकर संतुलन बनाए रखते हैं। इसी संदर्भ में, गुरु नानक 'धरम' को वह लंगर बताते हैं, जो इन दोनों मानवीय गतिविधियों को संतुलित करने में मार्गदर्शन करता है। क्रिया और ध्यान के संतुलन की यह समझ आधुनिक जीवन की जटिलताओं को सँभालने में और रुहानी संतुलन बनाए रखने में किस प्रकार मार्गदर्शन कर सकती है?

३. गुरु नानक प्रेम और मोह के बीच किस प्रकार भेद करते हैं?

इस एपिसोड में गुरु नानक 'प्रेम' और 'मोह' के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं। एक वृक्ष 'प्रेम' का प्रतीक है, क्योंकि वह बिना किसी अपेक्षा के दूसरों को पोषण देता है, जो सच्चे प्रेम का सार दर्शाता है। इसके विपरीत, एक भौंरा 'मोह' का प्रतीक है, क्योंकि वह फूलों की ओर आकर्षित होकर उनसे रस निकालता है, जो उसकी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, 'प्रेम' करुणा से उत्पन्न

होता है, जबकि 'मोह' अहंकार से जन्म लेता है। इस भेद को समझना हमें दूसरों और संसार से अपने संबंधों का मूल्यांकन करने और उन्हें रूपांतरित करने में किस प्रकार सहायता कर सकता है?

४. गुरु नानक के 'मूल मंत्र' का सार क्या है और यह उनके दर्शन को किस प्रकार समाहित करता है?

एपिसोड में 'मूल मंत्र' को गुरु नानक की बुद्धिमत्ता का आधार बताया गया है। 'मूल' का अर्थ है मौलिक, और 'मंत्र' का अर्थ है मन का उपकरण। गुरु नानक ने 'मूल मंत्र' की शुरुआत में '१' अंक को जोड़कर अपने अद्वैत दर्शन को व्यक्त किया, जिसमें एक प्रकाश के विभिन्न रूपों में सर्वव्यापकता को दर्शाया गया है। यह सत्य अनुभवजन्य ज्ञान और रुहानी बुद्धि के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है। गुरु नानक के दर्शन में यह मूल मंत्र दिव्यता और मानव स्वभाव को समझने के लिए किस प्रकार एक आधार प्रदान करता है?

५. मृत्यु और शारीरिक अस्तित्व की क्षणिकता को लेकर गुरु नानक का दृष्टिकोण क्या था?

गुरु नानक मृत्यु को जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा मानते हैं, यह कहते हुए कि दोनों अविभाज्य हैं, जैसे एक ही श्वास में सांस लेना और छोड़ना होता है। उनका विश्वास था कि चेतना अनंत है; अतः जीवन का हर पक्ष, जिसमें मृत्यु भी शामिल है, ईश्वरीय कृपा से प्रवाहित होता है। उनके अनुसार, शरीर अंततः मिट्टी में बदल जाता है, जिससे हमारा भौतिक अस्तित्व भ्रमपूर्ण प्रतीत होता है। वे हमें स्मरण कराते हैं कि शरीर और उसकी इच्छाएँ दोनों ही अस्थायी हैं। शारीरिक अस्तित्व की इस क्षणिकता की समझ हमें अर्थपूर्ण जीवन जीने के दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है?

६. अन्य रुहानी परंपराओं के साथ वार्तालाप और सहयोग के विषय में गुरु नानक का दृष्टिकोण क्या था?

गुरु नानक रुहानी सहयोग के अग्रदूत थे, जो साधकों और संतों के साथ वार्तालाप को दिव्य से एक गहन संवाद मानते थे। इस एपिसोड में, उनके विभिन्न सूफ़ी संतों से संपर्क उनकी इंटरफेथ वार्तालाप को बढ़ावा देने की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। यह समतावादी दर्शन गुरु ग्रंथ साहिब में प्रतिपादित है, जो विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए रुहानी नेताओं के सबदों का खजाना है। परंपराओं के पार इस प्रकार की रुहानी वार्तालाप की यह विधि आज की विविधतापूर्ण दुनिया में इंटरफेथ समझ के लिए किस प्रकार एक आदर्श प्रस्तुत करती है?